खुले ना बंध बिना बांधे, बिध बिध खोले जाए।
ए माया मोहोरे देख के, उरझ रहे सब मांहें।। १८ ।।

यह परिवार के, बिना बंधे हुए बन्धन तरह-तरह के प्रयत्न करने पर भी नहीं छूटते। इस संसार के जीव मोह के बन्धन में बंधे हुए परस्पर एक-दूसरे में उलझे हुए हैं। इसे तो कोई बांधने वाला ही खोल सकता है।

जागो जगाऊं जुगत सों, छोड़ो नींद विकार।
पेहेचान कराऊं पिउ सों, सुफल करूं अवतार।। १९ ।।

महामतिजी कहती हैं, सुन्दरसाथजी! जागृत हो जाओ। मैं तुम्हें तारतम वाणी के ज्ञान से जगाती हूं। तुम माया की चाहना रूपी विकारों को छोड़ दो और अपने प्रीतम धनी को पहचानो, तो मेरा भी जीवन सफल हो जाए। आपको पहचान कराने पर ही मेरा भी जीवन सफल होगा।

वतन देखाऊं पिउ का, और अपनी मूल पेहेचान।
एह उजाला करके, धोखा देऊं सब भान।। २० ।।

हे सुन्दरसाथजी! आओ अपने धनी और वतन की पहचान कराती हूं। तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हारे मन के संशय मिटा दूंगी।

ए भोम हांसी देख के, आप होत सावचेत।
मूल सुख कहे महामती, तुमको जगाए के देत।। २१ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम इस हांसी (हंसी) की भूमि को देखकर सावधान हो जाओ जिससे तारतम वाणी के ज्ञान से तुम्हें जगाकर परमधाम के मूल सुख तुम्हें दिखाऊं।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ६१९ ।।

जागनी का प्रकरण

अब जाग देखो सुख जागनी, ए सुख सोहागिन जोग।
तीन लीला चौथी घर की, इन चारों को यामें भोग।। १ ।।

श्री महामतिजी कहती हैं, हे सुन्दरसाथजी! अब तुम जागकर (सावचेत होकर) जागनी के ब्रह्माण्ड के सुखों को देखो। यह सुख ब्रह्मसृष्टियों के ही लायक है। इस जागनी की लीला में बृज, रास, जागनी की लीला तथा चौथा परमधाम का अखण्ड सुख का आनन्द मिलता है।

कह्या न जाए सुख जागनी, सत ठौर के सनेह।
तो भी कहूं जिमी माफक, नेक प्रकासूं एह।। २ ।।

जागनी के सुखों का वर्णन कहने में नहीं आता। इसमें अपने मूल घर परमधाम की पहचान होती है। फिर भी इस जमीन के अनुसार थोड़ा सा जाहिर करती हूं।

अब जगाऊं जुगत सों, उड़ाऊं सब विकार।
रंगे रास रमाए के, सुफल करूं अवतार।। ३ ।।

अब मैं बड़ी युक्ति से तुम्हें जगाऊंगी और तुम्हारे सभी विकारों को दूर कर दूंगी। फिर आनन्द में विभोर करूंगी और संसार में अपना आना सफल करूंगी।

Nijanand App

अब दुख न देऊं फूल पांखड़ी, देखूं सीतल नैन।
उपजाऊं सुख सब अंगों, बोलाऊं मीठे बैन।।४।।

हे साथजी! अब तुम्हें एक फूल की पत्ती मारने से जितनी चोट लगती है उतना भी कष्ट नहीं दूंगी। मैं तुम्हें प्यार भरी ठंडी नजर से देखूंगी और तुम्हें रोम-रोम के सुख अनुभव कराऊंगी और बड़े प्यार से बुलाऊंगी।

आगे कलकली कलकलाए, तोहे न गयो विकार।
कठिन सही तुम खंडनी, वचन खांडा धार।।५।।

आगे रो-रोकर कलपकर और गुस्से के साथ तुम्हें जगाया, फिर भी तुम्हारे अन्दर के विकार नहीं हटे। मैंने तुम्हें तीखे खण्डनी के वचन कहे जिसे तुमने सहन किया।

सो ए वचन मोहे सालहीं, कठिन तुमको जो कहे।
सोहागनियों को निद्रा मिने, मूल घर विसर गए।।६।।

मैंने तुम्हें खण्डनी के जो वचन कहे, वह आज मुझे खटक रहे हैं। हे सुन्दरसाथजी! तुम माया में आकर अपने परमधाम को भूल गए थे, इसलिए मुझे ऐसा कहना पड़ा।

अब गालूं ताओ दिए बिना, करूं सो रस कंचन।
कस चढ़ाऊं अति रंगे, दोऊ पेर करूं धंन धंन।।७।।

अब तुम्हें कुछ कष्ट दिए बिना ही जगाऊंगी और तुम्हें बिना क्रोधित किए कंचन जैसा निखारकर निर्मल कर दूंगी। मैं तुम्हें प्रेम और इश्क के रंग में सराबोर कर दूंगी और इस प्रकार संसार और परमधाम के सुखों को देकर तुम्हें धन्य-धन्य करूंगी।

जानूं साथजी विदेस आए, दुख देखे कई भांत।
जो लों न इत सुख पावहीं, तो लों न मोहे स्वांत।।८।।

मैं जानती हूं कि मेरे सुन्दरसाथ विदेश आए हैं और यहां उन्होंने बहुत दुःख देखे हैं, इसलिए जब तक सुन्दरसाथ को यहां सुख नहीं मिलेंगे तब तक मुझे शान्ति नहीं है।

नैन चढ़ाए साथ न जागे, यों न जागनी होए।
मूल घर देखाइए, तब क्यों कर रेहेवे सोए।।९।।

गुस्से में आकर सुन्दरसाथ की जागनी नहीं होती। उन्हें जब अपने मूल घर की पहचान हो जाएगी (अनुभव हो जाएगा) तो कोई सुन्दरसाथ पीछे नहीं रहेंगे।

खंडनी कर खीजिए, जागे नहीं इन भांत।
दीजे आप ओलखाए के, यों साख देवाए साख्यात।।१०।।

खण्डनी करके तथा नाराज होकर कोई सावचेत नहीं होता। पहले उन्हें अपने आप की पहचान और ग्रन्थों से गवाहियां देकर मन में दृढ़ता दिला दीजिए।

जगाऊं सुख याद देने, करूं आप अपनी बात।
पीछे हम तुम मिलके, जाहेर कीजे विख्यात।।११।।

तुम्हें परमधाम के सुख याद दिलाने के वास्ते ही मैं अपनी बात करती हूं। पीछे जागृत होने पर हम तुम संसार में जाहिर हो जाएंगे।

Nijanand App

आगे आवेस मोपे पिया को, दे अंग लई जगाए।
निसंक निद्रा उड़ाए के, साख्यात लई बैठाए।। १२ ।।

पहले धनी ने अपना आवेश देकर मुझे जागृत किया और इस माया से मुझे अलग करके साक्षात् अपने चरणों में बिठाया।

अब रह्यो न जाए नेक न्यारे, यों किए जागनी ले।
अहंमेव जाग्या धाम का, हम मिने आया जे।। १३ ।।

अब जागृत होने के बाद मुझसे एक पल भी धनी से अलग नहीं रहा जाता। मेरे अन्दर परमधाम का स्वाभिमान जागृत हो गया है।

पेहेले जोगमाया भई रास में, ताको सो अति उजास।
पर साथ जोग होसी जागनी, ताको कह्यो न जाए प्रकास।। १४ ।।

अब श्री राजजी महाराज कहते हैं कि पहले योगमाया के ब्रह्माण्ड में रास रमण किया। उसकी भी जानकारी तुम्हें कराई। अब तो हे साथजी! इस जागनी के ब्रह्माण्ड के जो सुख मिलेंगे वह वर्णन नहीं किए जा सकते।

अब विछोहा खिन एक साथ को, सो मैं सह्यो न जाए।
अब नेक वाओ इन मायाकी, जानों जिन आवे ताए।। १५ ।।

अब सुन्दरसाथ की जुदाई एक पल के लिए भी मैं सहन नहीं कर सकती। यह भी चाहती हूं कि सुन्दरसाथ को माया के दुःख तनिक भी न हों।

साथजी इन जिमी के, सुख देऊं अति अपार।
हंस हंस हेते हरख में, तुम नाचसी निरधार।। १६ ।।

हे साथजी! इस संसार के अपार सुख तुमको भी दूंगी और तुम भी हंसते-हंसते बड़े प्रसन्न मन से मस्ती में नाचोगे।

प्रीतम मेरे प्राण के, अंगना आतम नूर।
मन कलपे खेल देखते, सो ए दुख करूं सब दूर।। १७ ।।

हे सुन्दरसाथजी! तुम मेरे प्राणों के प्रीतम हो और मेरी नूरी अंगना हो। यहां तुम्हारे मन खेल देखकर दुःखी होते हैं। वह सारे दुःख मैं अब दूर कर दूंगा।

मुख करमाने मन के, सो तुमारे मैं ना सहूं।
ए दुख सुख को स्वाद देसी, तो भी दुख मैं ना देऊं।। १८ ।।

हे साथजी! मैं तुम्हारे मुरझाए मुख को भी नहीं देख सकता। इस संसार के दुःख-सुख भी लज्जत (स्वाद) देंगे। यह जानकर भी मैं तुम्हें दुःख नहीं दूंगा।

सत सुख में सुख देयसी, इन जिमी के दुख जेह।
तुम हंसोगे हरख में, रस देसी दुखड़ा एह।। १९ ।।

इस जमीन के दुःख अखण्ड परमधाम में सुख देंगे। तुम बड़े प्रसन्न मन से इन दुःखों को यादकर आनन्द लोगे।

Nijanand App

हम उपाया सुख कारने, ए जो मांग्या खेल तुम।
दुख दे वतन बोलावहीं, ए इन घर नहीं रसम।।२०।।

तुमने जो यह खेल मागा था, उसे मैंने तुम्हारे लिए बनाया। तुम्हें दुःखी करके वापस घर बुलाने की हमारे घर परमधाम की रीति नहीं है।

सेहेजल सुख तुमें है सदा, अलप नहीं असुख।
तुम सुख को स्वाद लेने, खेल मांग्या ए दुख।।२१।।

उस अखण्ड परमधाम में सदा सुख ही सुख हैं और दुःख का नामोनिशान भी नहीं है। तुमने सुख का स्वाद लेने को ही यह दुःख का खेल मांगा था।

खेल मांग्या दुख का, तब कह्या हम तुम।
दुख का खेल तुमको, क्यों देखावें हम।।२२।।

जब तुमने दुःख का खेल मांगा था, तब मैंने तुम्हें मना किया था कि तुम्हें हम दुःख का खेल कैसे दिखाएं।

दुख तो क्योंए देऊं नहीं, तो खेल देख्या क्यों जाए।
खंत लगी खरी खेल की, तिनको सो एह उपाए।।२३।।

हे साथजी! दुःख तो मैं किसी तरह से भी नहीं दूंगा, लेकिन दुःख के बिना तुम खेल कैसे देखोगे? तुम्हें खेल देखने की चाहना खरी लगी और उसका यही उपाय था।

पिया हम खेल जान्या घरका, ज्यों खेल करत सदाए।
हम खेल खड़े यों देखसी, ए भी इन अदाए।।२४।।

अब सुन्दरसाथ कहते हैं कि हे पिया! हमने इस खेल को भी परमधाम जैसा ही खेल समझा था। जैसा कि हम सदा से धाम में खड़े-खड़े देखते थे इसको उसी तरह से देखेंगे।

वस्तोगते दुख ना कछू, जो पीछे फेरो दृष्ट।
जो देखो वचन जागके, तो नाहीं कछुए कष्ट।।२५।।

अब राजजी महाराज कहते हैं, हे साथजी! यदि तुम माया से नजर हटाकर परमधाम के सुखों को विचारो तो यह दुःख हकीकत में कुछ भी नहीं है। जागृत होकर इन वचनों को देखो तो तुम्हें कुछ भी कष्ट नहीं है (क्योंकि तुम्हारे तन परमधाम में हैं)।

लगोगे जो दुख को, तो दुख तुमको लागसी।
याद करो जो निज सुख, तो दुख तुमथें भागसी।।२६।।

यदि तुम दुःख की चाहना करके लगे रहोगे तो तुम्हें दुःख होगा और यदि घर के सुख को याद करोगे तो दुःख अपने आप दूर हो जाएगा।

फेर देखो जो नजरों, तो रेहेसी न्यारे दुख।
करोगे इत खेल रंगे, विनोद बातें मुख।।२७।।

और फिर यदि निजघर की नजर से खेल देखोगे तो दुःखों से सदा न्यारे रहोगे। जागृत होकर यहां खेल देखोगे तो हंसी-खुशी बातें करोगे।

Nijanand App

सागर सुख में झीलते, तहां दुख नहीं प्रवेस।
तो दुख तुम मांगिया, सो देखाया लवलेस।। २८ ।।

परमधाम में तुम सदा ही सुख के सागर में मग्न रहते थे। वहां दुःख का नाम भी नहीं था, इसलिए तुमने दुःख मांगा तो मैंने यह जरा सा दुःख तुम्हें दिखाया।

पौढ़े भेले जागसी भेले, खेल देख्या सबों एक।
बातां करसी जुदी जुदी, बिध बिध की विसेक।। २९ ।।

परमधाम में तुम सब एक साथ खेल देखने बैठे थे और सब मिल करके एक साथ ही खेल देखकर जागोगे। जागने के बाद इस एक ही खेल की जुदी-जुदी बातें करोगे।

दुख तुमारे मैं न सहूं, सो जानो चित्त चौकस।
ए दुख देसी बोहोत सुख, खेल होसी रंग रस।। ३० ।।

श्री राजजी महाराज कह रहे हैं, हे साथजी! यह तुम दिल में अच्छी तरह दृढ़ (चौकस) कर लो कि मैं तुम्हें दुःखी नहीं देख सकता। यह दुःख तुम्हें परमधाम में अति सुख देगा। वहां इस खेल के रसों का आनन्द अनुभव होगा।

साथ को इन जिमी के, सुख देने को हरख अपार।
रासमें रंग खेल के, भेले जागिए निरधार।। ३१ ।।

हे साथजी! तुमको इस जमीन के भी अपार सुख देने की चाहना है। इस जागनी रास में खेल का आनन्द लेकर ही हम इकट्ठे जागेंगे।

अब ल्योरे मेरे साथ जी, इन जिमी ए सुख।
मैं तुमारे न सेहे सकों, जो देखे तुम दुख।। ३२ ।।

हे मेरे साथजी! अब तुम इस दुःख भरे संसार में परमधाम के सुखों को लो। जो तुमने इससे पहले यहां दुःख देखे हैं मेरे से वह सहन नहीं होते।

लेहेर लगे तुमें मोह की, सो आतम मेरी न सहे।
अब खंडनी भी न करूं, जानों दुखाऊं क्यों मुख कहे।। ३३ ।।

माया की तुम्हें जरा भी लहर से दुःख हो, यह भी मुझसे सहन नहीं होता। अब मैं तुम्हें ऐसा वचन नहीं कहूंगा जिससे तुम्हें दुःख हो (अर्थात् अब कठिन शब्द नहीं कहूंगा)।

अब क्यों देऊं कसनी, मुख करमाने न सहूं।
तिन कारन सब्द कठन, मेरे प्यारों को मैं क्यों कहूं।। ३४ ।।

अब तुम्हें कसनी के भी दुःख नहीं झेलने पड़ेंगे, क्योंकि मैं तुम्हारे मुरझाए मुख को भी सहन नहीं कर सकता और अपने प्यारे सुन्दरसाथ को कोई कठिन शब्द नहीं कहूंगा।

अब तारूं तुमें या बिध, ज्यों लगे न लेहेर लगार।
सुखपाल में बैठाए सुखें, घर पोहोंचाऊं निरधार।। ३५ ।।

अब तुम्हें इस तरह से घर ले चलूंगा कि तुम्हें यहां से निकलने में जरा भी कष्ट न हो। तुम्हें सुखपाल में बिठाकर निश्चित रूप से घर ले चलूंगा।

Nijanand App

उपजाए देऊं अंग थें, रस प्रेम के प्रकार।
प्रकास पूरन करके, सब टालूं रोग विकार।। ३६ ।।

आपके अन्दर प्रेम के आनन्द की अलग-अलग तरीके के सुखों की इच्छा पैदा कर दूंगा और तुम्हें अपनी पूरी पहचान कराकर तुम्हारे सब रोग और विकारों को दूर कर दूंगा।

अंग दिए बिना आवेस, नाहीं प्रेम उपाए।
आवेस दे करूं जागनी, लेऊं अंग में मिलाए।। ३७ ।।

तुम्हारे अंग में अपना आवेश दिए बिना दूसरा कोई प्रेम का उपाय नहीं है। आवेश देकर ही तुम्हें जागृत कर अपने में एक रस कर मिला लूंगा।

अब भेले तो सब चलिए, जो अंग न काहूं अटकाए।
तो तुमें होवे जागनी, जो सांचवटी बटाए।। ३८ ।।

हे साथजी! अब हम इकट्ठे होकर तो चल सकते हैं यदि किसी की इच्छा बाकी न हो। जब मैं तुम्हें परमधाम के सच्चे सुख यहां दूंगा तो तुम्हारी जागनी हो जाएगी।

अब दुख आवे तुमको, तहां आड़ा देऊं मेरा अंग।
सुख देऊं भली भांतसों, ज्यों होए न बीच में भंग।। ३९ ।।

यहां पर जब भी तुम्हें कोई दुःख आयेगा तो वहां पर मैं तुम्हारे दुःख अपने पर ले लूंगा, ताकि सुख लेने में तुम्हें कोई रुकावट न हो।

ए लीला करूं इन भांतें, तो रास रंग खेलाए।
बिध बिध के सुख विलसिए, विरह जागनी सह्यो न जाए।। ४० ।।

यदि मैं इस तरह से यहां लीला करूंगा तो तुम्हें आनन्द आएगा। फिर तरह-तरह के सुख विलास कीजिए, क्योंकि जागृत अवस्था में विरह सहन नहीं होता।

जगाए नीके सुख देऊं, रेहेस खेलाऊं रंग।
सत सुख क्यों आवहीं, जोलों न दीजे अंग।। ४१ ।।

तुम्हें अच्छी तरह से जगाकर सुख दूंगा और आनन्द के साथ खेल के सुख लेंगे। जब तक मैं अपना अंग नहीं दूंगा तब तक तुम्हें परमधाम के सुख यहां कैसे मिलेंगे?

अंगना को अंग दीजिए, अंगना लीजे अंग।
पास देऊं पूरा प्रेम का, नेहेचल का जो रंग।। ४२ ।।

श्री राजजी कहते हैं, हे साथजी! इस तरह से मैं अपनी अंगनाओं को अपने अंग का आवेश दूंगा और उनके अंगों को अपने में मिला लूंगा जिससे उनको मेरे पूर्ण प्रेम का अखण्ड आनन्द प्राप्त होगा।

असतसों उलटाए के, सतसों कराऊं संग।
परआतम सों बंध बांधूं, ज्यों होए न कबहूं भंग।। ४३ ।।

तुम्हें इस झूठे संसार से हटाकर सच्चे धनी के सुखों को दिखाऊंगा और तुम्हारी परात्म से ऐसे बंध बांधूगा जो फिर कभी टूटेंगे नहीं।

Nijanand App

पिउ जगाई मुझे एकली, मैं जगाऊं बांधे जुथ।
ए जिमी झूठी दुख की, सो कर देऊं सत सुख।।४४।।

अब श्री महामतिजी कहते हैं कि धनी ने मुझे अकेले जगाया। अब मैं सुन्दरसाथ के जुत्थों के जुत्थ (समूह) को जगाऊंगी। यह सारा संसार जो दुःख से भरा है, इसको भी सच्चे सुख में बदल दूंगी।

सब साथ करूं आपसा, तो मैं जागी प्रमान।
जगाए सुख देऊं धाम के, मिलाए मूल निसान।।४५।।

सब सुन्दरसाथ को मैं अपने समान जगाकर सचेत कर दूंगी तभी मैं जागी कहलाऊंगी। सुन्दरसाथ को जगाकर परमधाम के सुख देने से ही मूल पच्चीस पक्ष उनको जाहिर हो जाएंगे।

आवेस जाको मैं देखे पूरे, जोगमाया की नींद होए।
पर जो सुख दीसे जागनी, हम बिना न जाने कोए।।४६।।

श्री महामतिजी कहते हैं कि श्री देवचन्द्रजी महाराज को मैंने आवेश का स्वरूप समझा था। जिस तरह से हमें योगमाया में धनी की सुध थी और घर की सुध नहीं थी, उसी तरह सतगुरु देवचन्द्रजी को तारतम ज्ञान से घर की सुध तो थी पर जागनी की सुध नहीं थी। जागनी के सुखों को मेरे बिना कोई नहीं जानता।

जो जाग बैठे धाम में, ताए आवेस को क्या कहिए।
तारतम तेज प्रकास पूरन, तिनथें सकल बिध सुख लहिए।।४७।।

जिन सतगुरु देवचन्द्रजी को परमधाम की पहचान हो गई थी, उनके तो आवेश का क्या कहना? क्योंकि तारतम के पूर्ण तेज से ही तो परमधाम के पूर्ण सुख प्राप्त होते हैं।

आवेस को नहीं अटकल, पर जागनी अति भारी।
आवेस जागनी तारतमें, जो देखो जाग विचारी।।४८।।

सतगुरु देवचन्द्रजी के अन्दर धनी का आवेश तो था, परन्तु जागनी का काम कितना कठिन है (भारी है) इसकी खबर नहीं थी। हे साथजी! यदि सावधान होकर विचारें तो तारतम ज्ञान और आवेश दोनों के होने से ही जागनी का सुख प्राप्त होता है।

ए पैए बतावे पार के, नहीं तारतम को अटकल।
आवेस जागनी हाथ पिया के, एह हमारा बल।।४९।।

तारतम ज्ञान कोई अटकल का ज्ञान नहीं है। तारतम ज्ञान से ही पार की पूरी पहचान परमधाम तक होती है। आवेश से जो जागनी होती है वह तो धनी के हाथ में है, जो उन्होंने मुझे बख्शी है और यही हमारी ताकत है।

तारतम के सुख साथ आगे, बिध बिध पियाने कहे।
पीछे ए सुख इंद्रावती को, दया कर सारे दिए।।५०।।

श्री राजजी महाराज ने श्री देवचन्द्रजी के तन में बैठकर तरह-तरह के तारतम के सुख सुन्दरसाथ को कहे। इसके बाद यह सारे सुख (तारतम के और आवेश के जिससे जागनी होती है) श्री इन्द्रावतीजी को धनी ने कृपा करके दिए।

Nijanand App

धंन पिया धंन तारतम, धंन धंन सखी जो ल्याई।
धंन धंन सखी मैं सोहागनी, जो मो में ए निध आई।।५१।।

हमारे धनी धन्य-धन्य हैं, तारतम ज्ञान धन्य है तथा सुन्दरबाई श्यामाजी जो तारतम ज्ञान लाई हैं वह धन्य हैं श्री इन्द्रावतीजी सुन्दरबाई से कहती हैं कि आप धन्य हैं, परन्तु यह न्यामत जागृत बुद्धि तारतम हैं और आवेश जागनी की सुध मेरे अन्दर आई जिससे मैं सोहागिन हो गई।

पिया ल्याए मुझ कारने, और हुआ न काहूं जान।
मैं लिया पिया विलसिया, विस्तारिया प्रमान।।५२।।

धनी मेरे वास्ते तारतम और आवेश लाए, जिसकी जानकारी किसी को नहीं हुई। इस ज्ञान को मैंने लेकर अपने पिया के विलास का सुख लिया और उस सुख की सुन्दरसाथ को प्रमाण दे-देकर पहचान कराई।

ए बानी सबमें पसरी, पर किया न साथे विचार।
पीछे दया कर दई धनिएं, अंग इंद्रावती विस्तार।।५३।।

यह तारतम जब सुन्दरसाथ को मिला तो उस समय किसी ने भी विचार नहीं किया। तब श्री राजजी महाराज ने इसे अपनी कृपा कर श्री इन्द्रावतीजी को दिया। इसका विस्तार श्री इन्द्रावतीजी के तन से हुआ।

बोहोत धन ल्याए धनी धामथें, बिध बिध के प्रकार।
सो ए सब मैं तोलिया, तारतम सबमें सार।।५४।।

धाम के धनी तो परमधाम से इश्क, इल्म, जोश, आवेश, आदि बहुत धन लेकर आए। इन सबको मैंने विचार करके देखा तो सबका सार मैंने तारतम ही पाया, क्योंकि तारतम के बिना कोई सुख मिल ही नहीं सकता।

तारतम का बल कोई न जाने, एक जाने मूल सरूप।
मूल सरूप के चित्त की बातें, तारतम में कई रूप।।५५।।

तारतम के बल को एक मूल स्वरूप श्री राजजी महाराज के अलावा और कोई नहीं जानता, क्योंकि तारतम से ही श्री राजजी महाराज के चित्त की सभी बातों का ज्ञान होता है।

साख्यात सरूप इंद्रावती, तारतम को अवतार।
वासना होसी सो बलगसी, इन वचन के विचार।।५६।।

श्री इन्द्रावतीजी तारतम के स्वरूप श्री राजजी महाराज की अवतार हैं। जो परमधाम की आत्मा होगी वह इन वचनों का विचार करके श्री इन्द्रावतीजी से आ मिलेगी।

सरूप साथकी पेहेचान, तारतममें उजास।
जोत उद्दोत प्रगट पूरन, इंद्रावती के पास।।५७।।

तारतम वाणी के ज्ञान से ही श्री राजजी और सुन्दरसाथ की पहचान होती है। श्री इन्द्रावतीजी के पास ही तारतम ज्ञान की पूरी जानकारी है।

वासनाओं की पेहेचान, बानी करसी तिन ताल।
निसंक निद्रा उड़ जासी, सुनते ही तत्काल।।५८।।

तारतम वाणी के ज्ञान से ही परमधाम की आत्माओं को तुरन्त पहचान हो जाएगी और इसके सुनते ही माया की अज्ञानता तत्काल उड़ जाएगी।

Nijanand App

एक लवा सुने जो वासना, सो संग न छोड़े खिन मात्र।
होसी सब अंगों गलित गात्र, प्रगट देखाए प्रेम पात्र।।५९ ।।

परमधाम की आत्मा एक शब्द के सुनने मात्र से ही कभी साथ न छोड़ेगी और सब अंगों से अपने धनी पर न्योछावर हो जाएगी और सदा प्रेम का पात्र होकर सेवा में मग्न रहेगी।

ए बानी सुनते जिनको, आवेस न आया अंग।
सो नहीं नेहेचे वासना, ताको करूं जीव भेलो संग।।६० ।।

इस वाणी को सुनकर जिसके अंग में आवेश (जोश) नहीं आया तो निश्चय समझ लेना कि वह परमधाम की आत्मा नहीं है और उसको मैं जीव सृष्टि के समान गिनूंगी।

वासना जीव का बेवरा एता, ज्यों सूरज दृष्टें रात।
जीव का अंग सुपनका, वासना अंग साख्यात।।६१ ।।

आत्मा और जीव में दिन और रात जैसा फर्क है। जीव का तन सपने का है जो मिट जाने वाला है और आत्मा के मूल तन साक्षात् परमधाम में बैठे हैं।

भी बेवरा वासना जीवका, याके जुदे जुदे हैं ठाम।
जीवका घर है नींद में, वासना घर श्री धाम।।६२ ।।

आत्मा और जीव की और भी हकीकत बताती हूं। इनके अलग-अलग धाम हैं। जीव का घर निराकार बैकुण्ठ में है और आत्मा का घर अखण्ड परमधाम है।

ना होए नया न पुराना, श्री धाम इन प्रकार।
घटे बढ़े नहीं पत्र एक, सत सदा सर्वदा सार।।६३ ।।

परमधाम में कोई चीज नई या पुरानी नहीं होती। एक पत्ते में भी वहां पर घट-बढ़ नहीं होती। वहां सदा एक जैसा ही रहता है।

जो किन जीवे संग किया, ताको करूं ना मेलो भंग।
सो रंगे भेलूं वासना, वासना सत को अंग।।६४ ।।

यदि किन्हीं जीवों ने यहां आत्माओं की संगत कर ली है तो उनके मिलाप के कारण वह अखण्ड हो जाएंगे। ऐसे जीवों को बहिश्त में रखूंगी और उनको वासनाओं जैसा ही वहां सुख मिलेगा।

तारतम तेज प्रकास पूरन, इंद्रावती के अंग।
ए मेरा दिया मैं देवाए, मैं इंद्रावती के संग।।६५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के तन में तारतम ज्ञान का पूर्ण प्रकाश है। धाम धनी कहते हैं कि यह मैंने ही दिया है और मैं श्री इन्द्रावतीजी के तन में बैठकर इसे दिलवा रहा हूं।

इंद्रावती के मैं अंगे संगे, इंद्रावती मेरा अंग।
जो अंग सौंपे इंद्रावती को, ताए प्रेमें खेलाऊं रंग।।६६ ।।

मैं श्री इन्द्रावतीजी के साथ उसके अन्दर विराजमान हूं। उसका तन मेरा ही तन है। जो भी श्री इन्द्रावतीजी पर अपना तन-मन अर्पण करेगा उसे मैं ही प्रेम के सुख दूंगा।

Nijanand App

बुध तारतम जित भेले, तित पेहेले जानो आवेस।
अग्या दया सब पूरन, अंग इंद्रावती प्रवेस।।६७ ।।

जहां तारतम ज्ञान और जागृत बुद्धि दोनों होंगे, वहां मुझे साक्षात् समझ लेना, क्योंकि यह दोनों मेरे सिवाय कोई नहीं दे सकता। मैंने हुक्म और मेहर को साथ लेकर श्री इन्द्रावतीजी के तन में प्रवेश किया है।

सुख देऊं सुख लेऊं, सुखमें जगाऊं साथ।
इंद्रावतीको उपमा, मैं दई मेरे हाथ।।६८ ।।

सब तरह से मैं सुन्दरसाथ को सुख देता हूं और लेता भी हूं। सुख से ही सुन्दरसाथ को जगाता भी हूं। श्री इन्द्रावतीजी को तो मैंने ही नाम और शृंगार की शोभा बख्शी है।

मैं दया तुमको करी, जो देखो नैना खोल।
ना खोलो तो भी देखोगे, छाया निकसी ब्रह्मांड फोड़।।६९ ।।

हे सुन्दरसाथजी! यदि तुम विचार कर देखो तो मैंने तुम्हारे ऊपर बहुत मेहर (कृपा) की है। यदि अब नहीं भी देखोगे तो भी तुम्हें दिख जाएगा जब तारतम ज्ञान की रोशनी ब्रह्माण्ड फोड़कर जाहिर होगी।

ए खेल देख्या बैठे घर, अग्याऐं सैयों नजर।
जब अंतर आंखां खुली, तब दृष्ट घरकी घर।।७० ।।

इस खेल को ब्रह्मसृष्टियां श्री राजजी महाराज के हुक्म से उनके चरणों में परमधाम में बैठकर देख रही हैं और जब यह फरामोशी का परदा हटेगा तो नजर वहीं परमधाम में होगी।

निज नैना देऊं खोलके, ज्यों आड़ी न आवे मोह सृष्ट।
होसी पेहेचान सत सुख, निज वतन देखो दृष्ट।।७१ ।।

तुम्हारी निज नजर को खोल देता हूं, जिससे तुम्हारे आड़े माया का ब्रह्माण्ड न आए। जब तुम निज नजर से देखोगे तो तुम्हें सच्चे सुख की पहचान हो जाएगी।

तारतम का जो तारतम, अंग इंद्रावती विस्तार।
पैए देखावे पार के, तिन पार के भी पार।।७२ ।।

तारतम का भी जो तारतम है, अर्थात् जो तारतम है वह क्षर पुरुष से बेहद और पार के पार तक का ज्ञान देता है और जो उसका तारतम है उससे पूरे पच्चीस पक्ष तथा वाहेदत और खिलवत का ज्ञान होता है, वह सब श्री इन्द्रावतीजी के तन में है, क्योंकि वहां श्री राजजी स्वयं विराजमान हैं। यहां से अपने घर, निराकार के पार तिन पार के भी पार तथा रंगमोहल तथा पच्चीस पक्षों में धनी का रूहों से और रूहों का धनी से प्यार का ज्ञान बताते हैं।

ब्रह्मांड दोऊ अखंड किए, तामें लीला हमारी।
तीसरा ब्रह्मांड अखंड करना, ए लीला अति भारी।।७३ ।।

इससे पहले हमने ब्रज और रास की दो लीलाएं की थीं और उसको अखण्ड कर दिया था। अब यह तीसरा जागनी का ब्रह्माण्ड अखण्ड करना है। यह बहुत भारी काम है।

तीन लीला माया मिने, हम प्रेमें विलसी जेह।
ए लीला चौथी विलसते, अति अधिक जानी एह।।७४ ।।

ब्रज, रास और सतगुरु देवचन्द्रजी के तन की लीला का हमने प्रेम से आनन्द लिया। अब यह जागनी के ब्रह्माण्ड की चौथी लीला को विलसते समय सबसे बड़ा जाना।

Nijanand App

एक सुख सुपनके, दूजे जागते ज्यों होए।
तीन लीला पेहेले ए चौथी, फरक एता इन दोए।।७५।।

हे सुन्दरसाथजी! एक सुख सपने का होता है जो वास्तव में नहीं होता है! एक जागृत में सुख होता है जो साक्षात् होता है। इस तरह से ब्रज की लीला में धनी के सुख सपने जैसे थे। रास में धनी की पहचान थी, यद्यपि घर की पहचान भले नहीं थी, तो भी सुख जागृत के थे। अब इस ब्रह्माण्ड में श्री धनी देवचन्द्रजी के तन की लीला ब्रज की तरह सपने की है और श्री इन्द्रावतीजी के तन से जागृत लीला परमधाम के सुखों की हैं। यही इन दोनों में अन्तर है।

पेहेले दृष्टें हमारे जो आइया, तेते मिने उजास।
हम खेलें तिन उजासमें. और लोक सब को नास।।७६।।

जिस तरह से पहले ब्रज में हमारी लीला (गोकुल, ब्रज और मथुरा में) हुई जो अखण्ड हो गई और बाकी ब्रह्माण्ड का प्रलय हो गया, उसी तरह श्री देवचन्द्रजी के तन से जिन सुन्दरसाथ को तारतम मिला उन्हें क्षणभंगुर सुख हुआ और बाकी दुनियां ऐसी ही रह गई। अब श्री इन्द्रावतीजी के तन से सारे ब्रह्माण्ड को अखण्ड करना और ब्रह्मसृष्टि को तथा ईश्वरी को अपने घर पहुंचाना साक्षात् जागृत लीला है।

अब लोक चौदे तरफ चारों, प्रकास होसी साथ जोग।
जीव सबको जगाए के, टालूं सो निद्रा रोग।।७७।।

अब सुन्दरसाथ की शोभा के योग्य चौदह लोकों में ज्ञान का प्रसार हो जाएगा तथा सारे ब्रह्माण्ड को जागृत करके उनके अज्ञान के रोग को मिटाकर अखण्ड कर देंगे।

हम जाहेर होए के चलसी, सब भेले निज घर।
वैराट होसी सनमुख, एक रस सचराचर।।७८।।

हम सारे ब्रह्माण्ड को जागृत करके अक्षर और हम घर जाएंगे। उस समय चर और अचर सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड को एक रस करके अखण्ड कर देंगे।

जब हम जाहेर हुए, सुध होसी संसार।
दुनियां सारी दौड़सी, करने को दीदार।।७९।।

जब हम जाहिर होंगे तो सारे संसार को खबर हो जाएगी और सारी दुनियां हमारे दर्शनों के लिए दौड़ेगी।

हम सदा संग पिया के, जो रूहें सोहागिन।
सो अग्यांऐं उठ बैठसी, सब अपने वतन।।८०।।

हम जो सुहागिनी ब्रह्मसृष्टियां हैं वह सदा अपने पिया के संग रहती हैं। अब वह सब धनी की आज्ञा से अपने घर परमधाम में उठ बैठेंगी।

अव्वल सब सोहागनी, एक ठौर पिया पास।
सबों सुख होसी सोहागनी, रंग रस प्रेम विलास।।८१।।

सबसे पहले सुहागिन ब्रह्मसृष्टियां अपने धनी के पास मूल मिलावे में जागृत होंगी, जिन्हें प्रेम और आनन्द के भरपूर सुख मिलेंगे।

Nijanand App

जो जोत होसी जागनी, ए नूर बिना हिसाब।
लोक चौदे पसरसी, तब उड़ जासी ए ख्वाब।। ८२ ।।

जो तारतम वाणी के ज्ञान से जागनी होगी, उसके प्रकाश का हिसाब बेशुमार होगा। जब यह चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में फैलेगा तो यह स्वप्न उड़ जाएगा।

ए बानी तो करूं जाहेर, जो करना सबों एक रस।
वस्त देखाए बिना, वैराट न होवे बस।। ८३ ।।

यह वाणी इसलिए जाहिर कर रही हूं क्योंकि सबको एक रस करना है अर्थात् एक परब्रह्म का पूजक बनाना है। इनको पार का ज्ञान बताए बिना यह ब्रह्माण्ड अधीन नहीं होगा।

वैराट बस किए बिना, क्यों कर होए अखंड।
हम खेल देख्या इछाए कर, सो भंग ना होए ब्रह्मांड।। ८४ ।।

जब तक यह ब्रह्माण्ड अधीन नहीं होगा तब तक अखण्ड कैसे किया जाएगा? जिस ब्रह्माण्ड को अपनी इच्छा करके देखा है वह नष्ट कैसे होगा? अखण्ड अवश्य होगा।

अनेक आगे होएसी, इन बानी को विस्तार।
ए नेक कह्या मैं करने, अखंड ए संसार।। ८५ ।।

इस वाणी का आगे चलकर बहुत बड़ा विस्तार होगा। यह तो संसार को अखण्ड करने के लिए मैंने थोड़े में कहा है।

ए बानी कही मैं जाहेर, सो विस्तरसी विवेक।
मैं गुझ कही है साथ को, पर सो है अति विसेक।। ८६ ।।

इस गुझ (गुह्य) वाणी को मैंने जाहिर कर दिया है, क्योंकि इसका आगे विस्तार होना है। यह छिपी बात मैंने सुन्दरसाथ के वास्ते कही है, पर यह बहुत बड़ी बात है।

संसार सब के अंग में, मेरी बुध को करूं प्रवेस।
असत सब होसी सत, मेरे नूर के आवेस।। ८७ ।।

सारे ब्रह्माण्ड के तनों में मेरी जागृत बुद्धि का तारतम ज्ञान फैल जाएगा, जिससे सारा झूठा ब्रह्माण्ड मेरे नूर के आवेश से अखण्ड हो जाएगा।

बुध मूल अछर की, आई हमारे पास।
जोगमाया को ब्रह्मांड, तिन हिरदे था रास।। ८८ ।।

अक्षर की मूल बुद्धि मेरे पास आई तो योगमाया के ब्रह्माण्ड में हमने अक्षर के हृदय में रास लीला को अखण्ड देखा।

ए हुती पिया चरने, दिन एते गोप।
वचन कोई कोई सत उठे, सोए करूं क्यों लोप।। ८९ ।।

यह आज दिन तक हमारे धनी के चरणों में छिपी हुई थी। इस बाबत संसार में कोई-कोई अपनी अटकल से बखान करते थे। उसे अब मैं क्यों छिपाऊं?

Nijanand App

बृज रास में हम रमे, बुध हती रास में रंग।
अब आए जाहेर हुई, इत उदर मेरे संग।। ९० ।।

ब्रज और रास में हमने लीला की। रास की लीला में अक्षर की बुद्धि हमारे साथ थी। जिससे हम अपने धनी को पहचान सके। अब यहां आकर जागनी के ब्रह्माण्ड में मेरे तन में आने से जाहिर हो गई।

इंद्रावती पिया संगे, उदर फल उतपन।
एक निज बुध अवतरी, दूजा नूर तारतम।। ९१ ।।

यहां श्री इन्द्रावतीजी और धनी के एक ही तन में एकाकार हो जाने से दो फल जाहिर हुए—एक जागृत बुद्धि और दूसरी नूर तारतम।

दोऊ सरूप प्रगटे, लई मिनों मिने बाथ।
एक तारतम दूजी बुध, देखसी सनमुख साथ।। ९२ ।।

जागृत बुद्धि और नूर तारतम प्रकट हुए। दोनों एक रूप हो गए। अब सुन्दरसाथ तारतम और जागृत बुद्धि को एक साथ देखेगा।

अछर केरी वासना, कहे जो पांच रतन।
कागद ल्याया बेहद का, सुकदेव मुनी धंन धंन।। ९३ ।।

अक्षर ब्रह्म की जो पांच वासनाएं कही हैं, उनमें बेहद का ज्ञान लाने से शुकदेव मुनि धन्य-धन्य हैं।

विष्णु मन खेल ले खड़ा, पकड़ के दोऊ पार।
भली भांत भेले विष्णु के, सनकादिक थंभ चार।। ९४ ।।

यहां बैकुण्ठ से ऊपर आदि नारायण और पाताल के नीचे शेषशायी नारायण दोनों तरफ से ब्रह्माण्ड के बंध बांधे खड़े हैं जिनके सनकादिक चार ज्ञान के थंभ (स्तम्भ) हैं।

महादेवजीऐं बृज लीला, ग्रह्यो अखंड ब्रह्मांड।
अछर चित सदासिव, ए यों कहावे अखंड।। ९५ ।।

अक्षर ब्रह्म के चित्त में (सबलिक ब्रह्म में) जो बृज और लीला अखण्ड हो रही है उसको शिवजी ने देखकर ग्रहण किया। इस तरह से यह अखण्ड है।

कबीर साख जो पूरने, ल्याया सो वचन विसाल।
प्रगट पांचो ए भए, दूजे सागर आड़ी पाल।। ९६ ।।

कबीरजी हमारी गवाही देने के लिए पार की वाणी को बोले। इस तरह से अक्षर की इन पांच वासनाओं के बिना सारे संसार के जीवों को ज्ञान नहीं मिल सका।

हम बुध नूर प्रकास के, जासी हमारे घर।
बैकुंठ विष्णु जगावसी, बुध देसी सारी खबर।। ९७ ।।

हम जागृत बुद्धि से तारतम ज्ञान का प्रकाश करके अपने घर वापस परमधाम जाएंगे। उस समय जागृत बुद्धि बैकुण्ठ में जाकर भगवान विष्णु को जगाएगी।

खबर देसी भली भांतें, विष्णु जागसी तत्काल।
तब आवसी नींद इन नैनों, प्रलेय होसी पंपाल।। ९८ ।।

जागृत बुद्धि से जगाने से भगवान विष्णु तुरन्त जागेंगे और तब संसार की आंखें बंद हो जाएंगी और प्रलय हो जाएगी।

Nijanand App

अछर खेल इछाए कर, छर रच के उड़ात।
वासना पांचों पोहोंचे इत, ए सत मंडल साख्यात।। ९९ ।।

अक्षर ब्रह्म अपनी इच्छा मात्र से खेल बनाते और मिटाते हैं। अक्षर की पांच वासनाओं को अक्षर ब्रह्म तक ही ज्ञान है। यह सदा अखण्ड हैं।

पांचो बुध ले वले पीछे, तामें बुध विसेक विचार।
अछर आंखां खोलसी, होसी हरख अपार।। १०० ।।

अक्षर की पांचों वासनाएं जब जागृत बुद्धि से अपने घर लौटेंगी तब वह विशेष विचार करेंगी और अक्षर ब्रह्म की फरामोशी हटेगी और तब बेशुमार आनन्द होगा।

लीला तीनों थिर होएसी, अखंड इन प्रकार।
निमख एक न विसरसी, रेहेसी दिल में सार।। १०१ ।।

ब्रज, रास और जागनी की तीनों लीलाएं अक्षर के मन, चित्त और बुद्धि में अखण्ड हो जाएंगी। हम रूहों के दिल में इनकी हकीकत अखण्ड हो जाएगी। एक पल के लिए भी भूलेंगी नहीं।

उत्तम भी कहूं इनमें, जहां तारतम को विस्तार।
वासना पांचों बुध ले, साख पूरसी संसार।। १०२ ।।

इन सब में जागनी की लीला उत्तम है। तारतम के ज्ञान से पहचान मिली और अक्षर ब्रह्म की पांचों वासनाएं भी इस ज्ञान से संसार को गवाही देंगी।

मेरी संगते ऐसी सुधरी, बुध बड़ी हुई अछर।
तारतमें सब सुध परी, लीला अंदर की घर।। १०३ ।।

अक्षर की जागृत बुद्धि भी मेरी संगति से सुधर गई। जिसको अब तारतम ज्ञान से परमधाम के अन्दर की सारी हकीकत का ज्ञान हो गया।

मेरे गुन अंग सब खड़े होसी, अरचासी आकार।
बुध वासना जगावसी, तिन याद होसी संसार।। १०४ ।।

मेरे गुण, अंग, इन्द्रियों के अखण्ड आकार की पूजा सारी बहिश्तों वाले करेंगे। जागृत बुद्धि अक्षर की पांचों वासनाओं को जगाएगी तो उनको भी इस संसार की लीला याद रहेगी।

बुध तारतम लेयके, पसरसी वैराट के अंग।
अछर हिरदे या बिध, अधिक चढ़सी रंग।। १०५ ।।

जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान को लेकर सारे वैराट के जीवों के अन्दर बैठ जाएगी और तब अक्षर के हृदय में यह संसार अखण्ड हो जाएगा, जिससे अक्षर ब्रह्म को अधिक आनन्द होगा।

।। प्रकरण ।। २३ ।। चौपाई ।। ७२४ ।।

निज बुध भेली नूर में, अग्या मिने अंकूर।
दया सागर जोस का, किन रहे न पकस्यो पूर।। १ ।।

जागृत बुद्धि का मिलन जब तारतम ज्ञान से हुआ और इन दोनों ने श्री इन्द्रावतीजी के अन्दर प्रवेश किया, तो श्री राजजी के हुक्म से श्री इन्द्रावतीजी का अंकुर जागा और श्री राजजी महाराज की मेहर और जोश के समुद्र में बड़े जोर का प्रवाह आया जिसको रोका नहीं जा सका।

Nijanand App